हर कण में बसी है हिन्दी,

मेरी माँ की बोली भी बसी है इसमें,

मेरा मान है हिन्दी,

मेरी शान है हिन्दी।

14 सितंबर, दिन सोमवार, दिल्ली पब्लिक विद्यालय के कक्षा–नर्सरी के छात्र–छात्राओं द्वारा हिन्दी दिवस के विशेष अवसर पर आभासी उत्सव **(Virtual Celebration)** आयोजित किया गया। स्वतंत्रता दिवस के इस उल्लासित पर्व पर छात्रों ने भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के रूप धारण करके अपने विचार व्यक्त किए। हिन्दी दिवस के विशेष अवसर पर नारे (स्लोगन) भी तैयार किए।

सभी छात्र–छात्राओं ने आभासी उत्सव में स्वयं को अत्यंत गर्वित व उत्साहित महसूस किया और आनंदपूर्वक समारोह मनाया।

हिन्दी दिवस का परिचय

अंग्रेजी भाषा के बढ़ते चलन और हिंदी की अनदेखी को रोकने के लिए हर साल 14 सितंबर को देशभर में हिंदी दिवस मनाया जाता है।आजादी मिलने के दो साल बाद 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा में एक मत से हिंदी को राजभाषा घोषित किया गया था और इसके बाद से हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। दरअसल 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी के पुरोधा व्यौहार राजेन्द्र सिंहा का 50-वां जन्मदिन था, जिन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए बहुत लंबा संघर्ष किया । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी को राष्ट्रभाषा के

रूप में स्थापित करवाने के लिए काका कालेलकर, मैथिलीशरण गुप्त, हजारीप्रसाद द्विवेदी, महादेवी वर्मा, सेठ गोविन्ददास आदि साहित्यकारों को साथ लेकर व्यौहार राजेन्द्र सिंहा ने अथक प्रयास किए।